Received: Jul '23
Revised:
Accepted: Aug '23

© 2023 by the authors. This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY) license (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/).

RELEVANCE OF GANDHIJI'S IDEAS IN WOMEN'S UPLIFTMENT
नारी उत्थान में गांधी जी के विचारो की प्रासंगिकता

Dr. Abhilasha Abusaria
Assistant Professor, Department of Political Science, Government Girls College, Jhunjhunu

ABSTRACT

Mahatma Gandhi was a champion of women's rights. He knew the plight of women in India. Therefore, he made many efforts so that women could be developed and women could also get a high position in society. There were no differences between the son and the daughter. In their eyes, women are superior to men. According to Gandhiji, men and women are complementary to each other, so it does not seem right to make any distinction between them. God has made man equal, but by social rules, man is given high status and women are given low status, due to which women have to face many problems in society. He was always in favor of women's empowerment. Therefore, he did many such works so that women could be promoted and get a higher position in society.

महात्मा गांधी नारी विकास के पक्षधर थे। वे भारत में नारी की दयनीय स्थिति के बारे में जानते थे। इसलिए उन्होंने बहुत से प्रयास किये जिससे नारी का विकास किया जा सके और नारी को भी समाज में उच्च स्थान प्राप्त हो सके। वे पुत्र और पुत्री में किसी प्रकार का भेदभाव नहीं करते थे। उनकी दृष्टि में चारित्रिक रूप से स्त्री पुरुष से अधिक श्रेष्ठ होती है। गांधी जी के अनुसार स्त्री पुरुष एक दूसरे के पूरक है, इसलिए उनमें किसी प्रकार का अंतर करना सही प्रतीत नहीं होता। ईश्वर ने मनुष्य को समान बनाया है परंतु सामाजिक नियमों द्वारा पुरुष को उच्च और महिला को निम्न दर्जा दिया गया जिसकी वजह से नारी को समाज में बहुत सारी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। वे हमेशा नारी के विकास के पक्षधर रहे थे। इसलिए उन्होंने बहुत से ऐसे कार्य किये जिससे महिलाओं को आगे बढ़ाया जा सके और उन्हें समाज में उच्च स्थान प्राप्त हो सके।

Keywords: अधिष्ठात्री, सुराज, देवदासी, स्वदेशी, क्रीतदासी।

गांधीजी तत्कालीन समाज मे नारी की दीन–हीन दशा से भली–भांति परिचित थे। वे शोषित और अपमानित मानवता के मसीहा थे। इसलिए उन्होने नारी की दीन–हीन स्थिति को सुधारने का व्रत लिया। उनके अनुसार स्त्री–पुरूष मे भेद करने की प्रवृति सही नही है। महिलाओ के सामाजिक, पारिवारिक और नागरिक अधिकार तथा कर्तव्य वही है जो पुरुषो के है। दोनो के सामाजिक–आर्थिक अधिकार समान है और दोनो की नैतिक क्षमताएँ भी एक जैसी है।[1]

गांधीजी के अनुसार स्त्री मे आत्मत्याग, सहिष्णुता, नैतिक शक्ति एवं साहस, अधिक है। जब स्त्री को पुरूष के बराबर अवसर प्राप्त हो जायेगें और वह परस्पर सहयोग और सम्बन्ध की शक्तियो का पूरा विकास कर लेगी तो संसार स्त्री शक्ति का सम्पूर्ण विलक्षणता और गौरव के साथ परिचय पा सकेगा।[2] नैतिक शक्ति की द्वष्टि से स्त्री निश्चित रूप से पुरूष की अपेक्षा श्रेष्ठ है किन्तु दुर्भाग्य से आज वह अपनी शक्ति पहचान नही पा रही है। गांधीजी का कहना था कि मै स्त्री और पुरूष मे कोई भेद नही करता हूँ। स्त्रियो को भी पुरूषो के समान स्वयं को स्वाधीन अनुभव करना चाहिए। वीरता केवल पुरूषो की बपौती नही है।[3] स्त्रियों का स्वयं को पुरूषो के अधीन या उन से हीन समझने का कोई कारण नही है। स्त्री साक्षात् त्याग की मूर्ति है जब कोई स्त्री जी–जान से किसी काम मे लग जाती है तो वह पहाड़ को भी हिला देती है।[4] गांधीजी की दृष्टि में स्त्री पुरूष समान है, दोनो समान बौद्धिक क्षमताओ से सम्पन्न हैं। स्त्री को मनुष्य के सभी कार्य व्यापारों मे भाग लेने का अधिकार हैं तथा वह उसी स्वतंत्रता की अधिकारिणी है जो पुरूषो को प्राप्त है।[5] स्त्री और पुरुष एक दूसरे के पूरक है स्त्रीयों को किसी प्रकार की हीन भावना से ग्रसित नही होना चाहिए। गांधीजी पुत्र और पुत्री मे कोई अन्तर नही करते थे।

गांधीजी चारित्रिक गुणो की दृष्टि से स्त्री को पुरूष से श्रेष्ठ मानते है। स्त्री त्याग, तपस्या, विनम्रता, आदर, श्रृद्धा और ज्ञान की प्रतिमूर्ति है। गांधीजी नारी जाति को अहिंसा की प्रतिनिधि मानते थे क्योंकि उसमें अनन्त प्रेम, असीम धैर्य और कष्ट सहने की अनन्त शक्ति है। पीडा भोगना और दूसरों को कम से कम कष्ट पहुंचाना उसके स्वभाव मे है इसलिए अहिंसा उसके लिए अधिक सहज है।[6] गांधीजी के अनुसार यदि कहीं विश्व मे तपन और जलन को मिटाने की सामर्थ्य है तो वह स्त्री जाति मे निहित है। युद्ध के खिलाफ हो रहे अहिंसक संघर्ष में दुनिया का नारी समाज सबसे अग्रणी रह सकता है और उसे रहना भी चाहिए, यह तो नारियो का अपना विशेष कार्य और अधिकार है।[7]

गांधीजी के अनुसार स्त्री और पुरुष एक दूसरे के पूरक है। स्त्री को भी आजादी का उतना ही अधिकार है जितना पुरूष को है। वे चाहते थे कि पुरूष अपने आप को स्त्री का सहचर एवं मित्र समझे न कि स्वामी वास्तव मे स्त्री पुरूष एक दूसरे के पूरक है न कि स्वामी और दास।[8] नारी पुरूष की भोग्या नही है वह घर परिवार की

अधिष्ठात्री है। वह जिस घर की अधिष्ठात्री है उसकी दासी नही अपितु स्वामिनी होती है।

गांधीजी ने महिला उत्थान की दिशा मे महत्वपूर्ण कार्य किया। उन्होने स्त्री उत्थान का बीड़ा उठाया और उन सब बाधाओं को हटाने का प्रयास किया जो महिलाओ की प्रगति मे बाधक थे। गांधीजी ने अनुभव किया कि महिलाओ के पुनरूत्थान के बिना सामाजिक क्रांति, आर्थिक विकास एवं सुराज संभव नही है।

गांधीजी ने बाल विवाह, दहेज प्रथा, वेश्यावृति एवं देवदासी प्रथा जैसी कुप्रथाओं का घोर विरोध किया। गांधीजी जानते थे कि भारतीय समाज मे स्त्रियों की स्थिति अच्छी नही हैं क्योकि पुरूष ने नारी पर अनेक प्रकार के अत्याचार किये है, उसे प्रताडित और अपमानित किया है और उसे अधिकारविहीन भी किया है। गांधीजी ने दहेज प्रथा को समाप्त करने के लिए नैतिक जागृति का सुझाव दिया और कहा कि इसके लिए हमारी शिक्षा का स्वरूप ऐसा होना चाहिए जो राष्ट्र की युवा पीढी मे मानसिक क्रांति ला दे। उन्होने इसी सन्दर्भ मे अन्तर्जातीय एवं अन्तर्प्रान्तीय विवाहों के साथ साथ लड़कियों को भी लड़कों के समान शिक्षित बनाने पर बल दिया। लड़कियो की समान शिक्षा से लड़की जीविकोपार्जन कर सकेगी और उसकी बुद्धि भी विकसित होगी जिससे वह ऐसे योग्य लड़के को वर चुनने के लिए स्वतन्त्र हो सकेगी जो दहेज की मांग न करता हो। वर्तमान समाज ने दहेज प्रथा ने उन्मूलन के लिए गांधीजी के विचारो से प्रभावित होकर जिस दिशा मे व्यवहार करना शुरू किया है उससे दहेज की प्रथा कम हुई है। दहेज मांगने पर नैतिक, सामाजिक और कानूनी बंधन उनकी शिक्षाओ की सफल प्रतिक्रियाएँ कहीं जा सकती हैं। गांधीजी पर्दा प्रथा को भी लड़कियों के आत्मविश्वास और आत्माभिव्यक्ति के लिए अत्यन्त हानिकारक मानते थे। गांधीजी अनुसार सबसे अच्छी सुरक्षा और सबसे सुन्दर पर्दा तो लड़की की अपनी शालीनता है।[9]

गांधीजी स्त्रियो का अधिक से अधिक अधिकार दिलाने के पक्ष मे थे ताकि स्त्रियो पर होने वाले अत्याचार रूक सके। ''गांधीजी स्त्री के अधिकारों के विषय मे किसी से भी कोई समझौता करने के लिए तैयार नही थे।''[10] उन्होने नागरिक अधिकारो के साथ साथ स्त्रियो को आर्थिक अधिकार दिये जाने की वकालत की। उन्होने स्त्रियों को सम्पति का अधिकार दिये जाने की मांग का समर्थन नैतिक तथा सामाजिक आधारों पर किया। गांधीजी के अनुसार पत्नी पति की क्रीतदासी नही है अपितु उस कि सहचरी, सहायिका तथा उसकी खुशियों और गमों मे बराबर की हिस्सेदार है। वह अपना रास्ता चुनने के लिए उतनी ही स्वतंत्र है जितना कि पति।[11]

गांधीजी ने नारियों को सार्वजनिक जीवन मे भाग लेने हेतु प्रेरित किया। उन्होने देश के वर्तमान तथा भविष्य को सुरक्षित बनाने के लिए हर क्षेत्र मे महिलाओं के योगदान को आवश्यक समझा। उन्होने स्त्रियों को सुगृहिणी बनने के साथ–साथ सार्वजनिक जीवन मे भाग लेने का आग्रह किया क्योंकि बहुत से ऐसे जटिल सामाजिक कार्य है जिन्हें स्त्री सरलता से सम्पन्न कर सकती है। स्त्रियाँ धर्म और संस्कृति की संरक्षिका होती है अतः उनसे हम ऐसे समाज निर्माण की आशा कर सकते है जो कम बुराइयों करने वाला हो।[12] स्त्रियां ही अहिंसा का सच्चा प्रतिनिधित्व करके सम्पूर्ण विश्व को युद्ध एवं हिंसा से बचा सकती हैं। गांधीजी महिलाओ को राजनीति मे भी पुरूषो के समान भागीदार बनाने के पक्ष मे थे। उनके अनुसार वर्तमान राजनीति मे आई गिरावट को यदि समाप्त करना हैं तो महिलाओ का राजनीति मे प्रवेश आवश्यक है। वे स्त्रियों को मताधिकार एवं समानता का अधिकार देने के समर्थक थे। उनका कहना था कि जहां महिलाऐ राष्ट्र के जीवन को प्रभावित करती है, वहां से विकास आरम्भ होता है। गांधीजी ने नारी सुधार एवं नारी मुक्ति के आन्दोलन चलाये। पुरूषों की बराबरी के लिए महिलाओ को राजनीति और स्वतन्त्रता आंदोलन मे भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्हीं की प्रेरणा से महिलाओं ने महानिषेध, स्वदेशी, अस्पृश्यता निवारण एवं अहिंसात्मक आन्दोलनों एवं रचनात्मक कार्यों में भाग लिया। राष्ट्रीय आन्दोलन में महिलाओं को सक्रिय करने मे गांधीजी को पर्याप्त सफलता मिली। 1931 के कराची मे सम्पन्न अखिल भारतीय कांग्रेस सम्मेलन के प्रस्ताव से महत्वपूर्ण नौकरियों और पदों के द्वार समान रूप से स्त्रियों के लिए खोल दिये गयें।

गांधीजी के विचारों और प्रयासों की सफलता का अनुमान वर्तमान भारत को देखकर सहज ही लगाया जा सकता है। आज की नारी सार्वजनिक एवं राजनीतिक जीवन मे सक्रिय है और वह अपने अधिकारों के प्रति अत्यधिक जागरूक है। शिक्षा के क्षेत्र मे भी वह अग्रणी है। पुरूषों से कधें से कधां मिलाकर आगे बढ़ रही है। स्त्री समानता के आदर्श को व्यवहार मे पाकर भारतीय समाज गांधीजी के प्रति ऋणी अनुभव करता हैं।[13] नारी जागृति और महिलाओं की राष्ट्रीय चेतना जागरण मे गांधीजी का योगदान अविस्मरणीय है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. विनोबा, स्त्रीशक्ति, सर्व–सेवासंघ, वाराणसी, 1969, पृष्ठ–9
2. यंग इण्डिया, दिनांक 07.05.1930, पृष्ठ–96
3. हरिजन, दिनांक 03.01.1947, पृष्ठ–1947, पृष्ठ–478
4. नवजीवन हिन्दी, दिनांक 25.12.1921
5. गांधी, एम. के. वीमेन्स एण्ड सोश्यल इनजस्टिस, नवजीवन प्रकाशन मण्डल इलाहबाद, 1942, पृष्ठ–4
6. हरिजन, दिनांक 05.05.1946, पृष्ठ–118

7. हरिजन, दिनांक 07.08.1940, पृष्ठ–217
8. गांधी, एम.के. स्पीचेज एण्ड राइटिंग्स ऑफ महात्मागांधी, जी. ए. नेटसन एण्ड क., मद्रास 1933, पृष्ठ–224–25
9. सम्पूर्ण गांधी वाड्मय, खण्ड 56 पृष्ठ– 127–28
10. अमृत कौर, राजकुमारी, गांधीजी एण्ड वूमेन, विश्व भारती गांधी मेमोरियल प्रन्यास 2.10.1949, पृष्ठ–166
11. गांधी एम. के., द स्टोरी ऑफ माई एक्सपेरीमेटस विद टूथ, महादेव देसाई द्वारा अनुदित, नवजीवन प्रेस, अहमदाबाद, 1959, पृष्ठ–18
12. विनोबा, वूमेन एज पेस मेकर (लेख) कस्तूरबा गांधी मेमोरियल ट्रस्ट 1962, पृष्ठ–18
13. तिवारी, पं रामदयाल, गांधी मीमांसा, इण्डियन प्रेस, इलाहबाद, 1941, पृष्ठ–193